शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण भारत एवं जनसंचार सुविधा विस्तार

डॉ.निशा जैन
प्राध्यापक समाजशास्त्र
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

जनसंचार सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम है। विज्ञान एवं इलेक्ट्रानिक्स का ज्ञान इसे विश्वस्तरीय स्तर पर सुगम बना रहा है। पश्चिम के विकसित समाज कम्प्यूटर नेटवर्क के साथ जुड़कर इलेक्ट्रानिक संस्कृति में स्थानांतरित हो रहे हैं। विशिष्ट संस्कृतियां और समुदाय बहुस्थानिक बहुजातियां और सांस्कृतिक संकुल के भीतर समाहित हो रहे हैं तथा द्वितीयक महत्व के हो रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार की व्यवस्थाएं अंक और अक्षर संकेतों के साथ जुड़कर मानव ज्ञान के व्यापक परिवेश को अपने संकेतों के भीतर समाहित कर रहे हैं। टेक्नोलॉजी और इलेक्ट्रानिक संकेतबद्ध सूचना प्रस्तुत कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति वैश्वीकरण की देन है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण भारत और जनसंचार सुविधा की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से संचार मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता रही है। पहले इसका संसाधन प्राकृतिक रूप से पक्षियों, मेघों, चांद-तारों से था परंतु विकास के साथ वैज्ञानिक प्रकृति ने आज पूरे विश्व को ग्लोबल विलेज बना दिया है। इंटरनेट के संज्ञान ने एक बटन के नीचे सारे संसार को पारदर्शी बना दिया है। सूचना तकनीक ने उपभोक्ता संस्कृति का विस्तार और संरक्षणवादी प्रकृति को उभारा है। भारत के ग्रामीण परंपरामूलक समाज को जहां संस्कृति सामाजिक प्रतिमान, आध्यात्मिक तथा संयुक्त परिवार व्यवस्था रही है, वहां इस संस्कृति ने इंद्रिय सुख, संग्रहवादिता तथा एकांगी जीवन दर्शन को बढ़ावा दिया है। हिंसा, अश्लीलता से भरे नित्य नये टीवी चैनल अपसंस्कृति प्रसार विदेशी मीडिया की भागीदारी, बढ़ता आतंकवाद, सामाजिक विघटन के नये आयाम, वैयक्तिक विघटन, सफेदपोश अपराध आदि तत्व इसी सूचना प्रौद्योगिकी के नये उत्पाद हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता और विस्तार

सूचना प्रौद्योगिकी में मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र में क्रांति लायी है। ग्रामीण क्षेत्रों में संचार सुविधाओं के विस्तार से अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी समाज को विभिन्न आवश्यकताओं का आधार बनती जा रही है। दिन-प्रतिदिन इंटरनेट का उपयोग बढ़ता जा रहा है। संपूर्ण भारत में इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या 300 मिलियन से अधिक है। इंटरनेट एवं मोबाइल एसोसिएशन आफ भारत एवं आइएमआरबी अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार भारत में इंटरनेट उपयोग करने वालों की वृद्धि पर 32 प्रतिशत है। यह संख्या 2013 तक की है। ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल पर इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या अक्टूबर 2013 तक 40 मिलियन थी। नीचे दी गयी तालिका से ग्रामीण

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लोगों में इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या प्रदर्शित होती है:

वर्ष	नगरीय	ग्रामीण	कुल
जून 2012	99	38	137
जून 2013	130	59.6	189.6
जून 2014	165	92	257
अक्टूबर 2014	177	101	278
दिसम्बर 2014	190	112	302
जून 2015	216	138	354

स्रोत: इंटरनेट एवं मोबाइल एसोसिएशन आफ इंडिया एवं आइएमआरबी

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर मोबाइल फोन उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। नवंबर 2015 तक वायरलेस एवं लैण्ड लाइन टेलीफोन उपभोक्ताओं की संख्यार 1035.18 मिलियन थी, जिनमें लैण्ड लाइन 25.72 मिलियन, सेलफोन 1009.46 मिलियन थे। (स्रोत: टेलीकम्युनिकेशन स्टेटिस्टिक्स इन इंडिया)

प्रौद्योगिकी एवं संचार विस्तार न केवल नगरीय क्षेत्रों में हो रहा है बल्कि ग्रामीण अशिक्षित समाज में भी तेजी से फैल रहा है। मोबाइल एवं इंटरनेट सुविधाएं आज की दैनिक जीवन की आवश्यकता बनती जा रही है। नवगठित सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने इस प्रौद्योगिकी का काम भारत की विकास प्रक्रिया को दिलाने के लिए पिछले वर्षों में उल्लेखनीय काम किए हैं और कई प्रौद्योगिकी विभाग भी खोले हैं।

प्रमुख प्रौद्योगिकी विभाग

अंकीय विषमाताओं को दूर करने के लिए भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने अमेरिका की मेसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी के साथ एक परियोजना आरंभ की है। मीडिया लैब एसोसिएशन नाम की इस परियोजना का उद्देश्य भारत और अन्य विकासशील देशों में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लोगों की बीच खाई को पाटना है। इस परियोजना में ग्रामीण विकास की जरूरतों को देखते हुए प्रौद्योगिकी विकास की बात कही गई है। जिसमें कम कीमत वाले कम्प्यूटर विकसित करना प्रमुख है। इसके अतिरिक्त बीट अवधारणा को रखा गया है। जिसमें ग्रामीण भारत में कम लागत पर घर-घर में इंटरनेट संपर्क उपकरण उपलब्ध करवाना है। गांव के युवाओं में अंकीय संचार के प्रति दिलचस्पी बनाने के लिए 'कल के साधन' नाम की परियोजना का प्रावधान है, जो उन्हें कम लागत पर सूचना संचार के साधन उपलब्ध कराएगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मिशन भी संपूर्ण भारत को डिजिटल इंडिया एवं स्मार्ट इंडिया बनाने का है, जिसके तहत प्रौद्योगिकी विस्तार पर बल दिया जा रहा है। डिजिटल इंडिया को ग्रामीण भारत से जोड़कर रखा गया है। इससे प्रशासनिक कार्यों में भी पारदर्शिता आएगी। सभी की पहुंच शासकीय योजनाओं तक होगी। सभी को त्वरित समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा। अधिकारियों का प्रत्यक्ष संपर्क जनता से होगा एवं वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये समस्या की जानकारी एवं समाधान प्राप्त होंगे। यह सभी सूचना प्रौद्योगिकी विस्तार से ही संभव है।

उपग्रह संचार का भी विस्तार हो रहा है। जिसके तहत दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीफोन सुविधओं का विस्तार हो रहा है। साथ ही आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के प्रसारण से जनसामान्य को जागरुक करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

टेक्नोलॉजी मिशन - राजीव गांधी के नेतृत्व में 1984 में टेक्नोलॉजी मिशन के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीफोन एक्सचेंज बने। यही कारण है

कि हम आम चुनावों के परिणामों को तीव्र गति से संचार माध्यमों पर देख-सुन रहे हैं। इसी तरह भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर उपलब्ध करवाने की मुहिम कानुपर स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान से आरंभ हुई। उसकी वजह से विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की मदद से पूर्व में सीडैक नामक संस्था बनी, जिसने अपनी प्रौद्योगिकी की मदद से आंध्रप्रदेश और मध्यप्रदेश में भूमि के आंकड़ों का कम्प्यूटरीकरण करना प्रारंभ किया। इसी संगठन ने सुपर कम्प्यूअर का निर्माण किया एवं समस्त भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर पर काम करने का सॉफ्टवेयर तैयार किया।

फ्रेंड्स काउंटर : करों के भुगतान को लेकर होने वाली परेशानी को दूर करने के लिए फ्रेंड्स फास्ट रिलायबल इंस्टेंट एफीशेंट नेटवर्क फार डिसबर्समेंट सर्विसेज नाम की सूचना टेक्नालाॅजी पर आधारित परियोजना शुरू की गयी, जिसमें बिचोलिये, रिश्वतखोर, भ्रष्टाचार आदि की समस्या स्वतः समाप्त हो जाएगी।

ई-सेवा परियोजना - इसके तहत सभी प्रकार के शासकीय भुगतान ऑनलाइन होते हैं। भूमि की रजिस्ट्री भी ऑनलाइन होती है। दैनिक जीवन की सुविधाओं जैसे गैस की बुकिंग, टेलीफोन की शिकायत आदि कार्य भी घर बैठे ऑनलाइन संभव हो रहे हैं। मेडिकल ट्रांसक्रिप्शन, बैंक आफिस प्रबंधन, वित्तीय सेवाओं, क्रेडिट कार्ड, होलट, पर्यटन, बीमा व्यवसाय एवं बैंकिंग कम्पनियां आदि सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से बेहतर सेवाएं प्रदान कर मानव जीवन को सुखी एवं आरामदायक बनाने का कार्य कर रहे हैं। ग्रामीण समाज जो थोड़ा बहुत शिक्षित है एवं कम्प्यूटर की जानकारी रखता है, वे सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ उठा कर सामाजिक जीवन में परिवर्तन का काम कार्य कर कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 द हिन्दू न्यूज पैपर

2 गूगल सर्च - नरेंद्र मोदी का डिजिटल इंडिया मिशन

3 टेली कम्यूनिकेशन स्टेटिस्टिक्स इन इंडिया

4 परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र, डॉ.जी.आर.मदन

5 समाज कल्याण, फरवरी 2012